ये ज़िंदगी की मुर्दा क़तारें!

सरला माहेश्वरी

ये ज़िंदगी की मुर्दा क़तारें

सरला माहेश्वरी

लेखिका के दो पूर्व आत्म-कथ्यों से

"कविता मेरे लिये अपने समय में प्रवेश के हजार दरवाजों में एक दरवाजा ही है। हर व्यक्ति अपने-अपने स्तर पर अपने वक्त पर काम करता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, कि उससे समय का कुछ बनता या बिगड़ता भी है या नहीं। यह बनना-बिगड़ना तो एक संयोग है, नियति का संयोग नहीं, अनेक प्रकार की चीजों का संयोग। और, जब है तो कहा जा सकता है कि वह एक चमत्कार भी है। कहते तो यह भी हैं कि जब कोई बदलाव बिल्कुल प्रकट हो तो फिर वह बदलाव नहीं होता है। जिसे बदलाव का संयोग कहते हैं, उसमें सिर्फ चीजें नहीं बदलती, जो दिखाई देता है, वही नहीं बदलता। बदल जाते हैं चीजों को देखने के मानदंड, जीवन का नजरिया। इसीलिये, आज हम एक ऐसे तेजी से बदलते समय में जी रहे हैं, जब कुछ भी नहीं बदल रहा है। अर्थात लगातार और तेज परिवर्तन इसलिये कि वस्तुत: कुछ भी परिवर्तित न हो। चीजों को देखने के अपने पुराने मानदंडों से ही हम चिपके रहें।"

"इसमें शक नहीं कि हमें भी यह बात सताती है कि कैसे कोई यह मान लेता है कि आदमी के अवचेतन पर विवेक नामक तत्व का पूर्ण वर्चस्व हो जायेगा। आदमी है तो उसके अंदर हमेशा कुछ ऐसे अवरोध रहेंगे जिनसे उसे जूझना है, जिनसे उबरना है या जिनके सामने आत्म-समर्पण कर देना है। परंपरा से मुक्ति ही तो हमारी संपूर्ण मुक्ति नहीं हो सकती। परंपराओं की बाधाओं को ठुकरा कर भी तो हम निश्चिंत नहीं होते, पाप-बोध पीछा नहीं छोड़ता न अंदर का अवसाद ही पूरी तरह से खत्म होता है। इसके अलावा, नये संसार को यदि पुरानी नजर से न देखें तो क्या इसका जादू कभी भी दिखाई देगा? और हमारे लिखे में यदि कोई जादू नहीं होगा तो फिर उसका मजा ही क्या रह जायेगा! जो था उसे जानना और जो है या आ रहा है उसके जादू को पकड़ना - यह मृतक में जीवन के स्पंदन को देख कर होने वाली अनुभूति की तरह है। यह डराती है और उल्लसित भी करती है। मृतक में जीवन के ठहराव और जीवित व्यक्ति में मृतक की गतिशीलता की अनुभूति के बिना क्या हम कभी भी किसी सच को देख पायेंगे, उसकी अभिव्यक्ति तो और भी कठिन है।"

'आपसे ऐसे ही चुभने वाले शब्दों की उम्मीदें बढ़ती जा रही हैं सरला जी। असरकारक।'

-सुधा अरोड़ा

कवयित्री सरला माहेश्वरी की कविताओं में एक परिपक्वता दिखाई देती है। यह परिपक्वता विचारों की ही नहीं, शिल्पगत भी है। नए पत्ते फूटने जैसी ताजा संवेदनाएं हैं। उनके संग्रह आसमान के घर की खुली खिड़कियां में तीन बातें खासतौर पर ध्यान आकर्षित करती हैं। एक, कुछ मशहूर क्रांतिकारी शख्सियतों और अपने कार्यों से सामाजिक बदलावों के निमित्त बन रहे कुछ अनाम-अल्पज्ञात लोगों पर लिखी गई कविताओं के बहाने व्यापक संवेदनाओं को व्यक्त का कौशल। दो, स्त्रियों के साझा अनुभवों और विशेष रूप से आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की स्त्रियों के सपनों पर लिखी गई कविताएं, जो स्त्री विमर्श के अधूरे वृत्त को पूरा करने का कार्य करती हैं। तीन, कवयित्री के स्पष्ट सामाजिक-राजनीतिक सरोकार जो बिना किसी ढीली-ढाली भाषा के वामपंथी सरोकार कहे जा सकते हैं, जो कवयित्री की सक्रिय संबद्धता के मेल में है। ये सरोकार निराशा के बजाय संघर्ष और सपने देखने के जज्बे को व्यक्त करते हैं।

-रमेश बर्णवाल

सरला माहेश्वरी की ये कविताएँ एक हिंसक और लोमहर्षक समय में तमाम तरह की अलंगतियों और विद्रूपताओं के बीच मूल नागरिक चेतना को जानने, समझने और उसे संरक्षित करने की कविताएँ हैं। ये हमारे समय का एक 'क्रॉनिकल' रचती है। ये सही मायनों में 21वीं सदी की विषय वस्तु को उठाती हैं जब मेक इन इंडिया और डिजिटल इंडिया की सारी जगर-मगर के बीच फासिस्ट राजनीति, धार्मिक उन्माद, जातिगत भेदभाव, जनजीवन में आर्थिक विषमताओं, बदहाली, शोषण, दमन, संताप और नियोजित हत्या-तंत्र का भयावह दुष्चक्र व्याप्त है; जब सत्ता केन्द्रों द्वारा संविधान के बुनियादी आदर्शों की धज्जियां उड़ायी जा ही हैं; जनतांत्रिक संस्थाओं, कानून और नागरिक आदर्शों का ढांचा निरन्तर चरमरा रहा है। ये एक आत्म-मुग्ध, अहंकारी और निरंकुश सत्ता के झूठ-तंत्र के विरुद्ध आत्म-सजगता की कविताएँ हैं।

- विजय कुमार

अनुक्रम

'डायर-क्षण' में एक आत्म-कथन	9
ये ज़िंदगी की मुर्दा क़तारें!	11
क्यों भोगे!	13
दाँव पर है!	14
कहकर आप हँसे!	16
काला जादू!	17
तदात्मानम सज्याहम!!	19
बागों में बहार है	22
राजा मिडास	23
ऐसा भी क्या झूठा अहँकार जी!	24
अंतिम शरणस्थली!	26
लावारिस नोटबंदी का लल्ला	29
मुझे मेरे भक्तों से बचाओ!	30
होलुई गान	32
हम सबको बस नजीब चाहिए!	33
सत्य का सुख!	35
बड़े अहंकार!	37
अच्छी नीयत!	39
अब हमारी बारी है!	40

डिजिटल टाइम में	42
इर्शाद! इर्शाद!	44
सलाह	45
बिम्ब!	47
ज़िंदगी नहीं है कोई शिलालेख!	48
धर्म, न्याय और आदमी!	49
ओ खरड़ के मेरे जाट भाई चाहती हूँ तुम्हें गले लगाना!	50
आओ आज हम गले लग जाएँ	53
बुरी आदतें	55
ओ मेरे बच्चों!	57
निरीह आदमी	58
हार्मोन ऑउटबर्स्ट!	59
ओ नीलकांत जी!	62
सुर्ख़ इक़बाल	65
अनारकली ऑफ़ आरा!	66
आदमी और हैवान	68
मूर्तियाँ नहीं करती प्रतिवाद!	72
भविष्य रुका हुआ है तुम्हारे लिये, ओ लेनिन!	75
हम हैं तमिलनाडु के किसान!	78
ये सब क्यों?	80
बिलकिस बानो!	82
नाशिरा शर्मा के 'जहाँ फ़व्वारे लहू रोते हैं' को पढ़ते हुए,	85

ईरान की मज़हबी क्रांति श्रृंखला की पाँच कविताएँ

जहाँ फ़व्वारे लहू रोते हैं!	86
ईरान और ख़ामोश बग़ावत की आग!	88
आज़ादी की ये कैसी ख़ुशबू	92
एक स्वप्न कथा	97
हम तब जाहिल थे!	100
रिमोट को कहीं दूर फेंक आएँ	104
जहाँ धोबी कपड़ों से पत्थर तोड़ता है!	105
यह जो फँसा हुआ है	108